Economics

B.A. 2nd Semester – Fundamental of Economics – Minor- NEP 2020

Lecture-01

व्यष्टि अर्थशास्त्र – आसय, प्रकृति व क्षेत्र

अर्थशास्त्र क्या है? (What Ecomomics is About?)

अर्थशास्त्र ज्ञान की उस शाखा को कहते है जिसमे मनुष्यों की उन गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है जिन्हे वे दुर्लभ साधनों (अर्थात् धन) को प्राप्त करने के लिए करते है जिससे वे अपनी असीमित आवश्यकताओं को सन्तुष्ट कर सकें।

अर्थशास्त्र शब्द का अर्थ वह विज्ञान है जिसमे धन से संबंधित मानवीय गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है। अंग्रेजी भाषा में अर्थशास्त्र शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दों *Olikos* **(गृहस्थ)** तथा *Nemein* **(प्रबन्ध)** से हुई है। इनका एक साथ अर्थ **गृह प्रबन्ध** है।

प्रत्येक गृहस्थ अपने धन का प्रयोग इस प्रकार करना चाहता है जिससे कि उसकी अधिकांश आवश्यकताएं सन्तुष्ट हो सके अर्थात् उसे अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त हो सके।

इसी प्रकार एक उत्पादक विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करने के लिए अपने दुर्लभ साधनों का बंटवारा इस प्रकार करता है कि उसे अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर, अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त हो सके।

सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर, अधिकतम सन्तुष्टि का अर्थ अधिकतम सामाजिक कल्याण होता है। अतः व्यक्तिगत स्तर पर अधिकतम सन्तुष्टि, एक उत्पादक के स्तर पर अधिकतम लाभ तथा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर अधिकतम सामाजिक लाभ के उद्देश्य को प्राप्त करने (दुर्लभ साधनों का वैकल्पिक प्रयोगों में बंटवारे द्वारा) के लिए ही हमें अर्थशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता होती है।

अर्थशास्त्र *(Economics)* अर्थशास्त्र उस मानवीय व्यवहार का विज्ञान है जिसका संबंध सीमित साधनों का बंटवारा इस ढंग से करना है जिससे कि उपभोक्ता अपनी सन्तुष्टि को अधिकतम कर सकें, उत्पादक अपने लाभ को अधिकतम कर सके। और समाज अपने सामाजिक कल्याण को अधिकतम कर सकें।

दुर्लभता (Scarcity) वह यह स्थिति है जिसमें जितना आप प्राप्त करना चाहते है, उससे कम प्राप्त करते है। अन्य शब्दों में, दुर्लभता से अभिप्राय उस स्थिति से जिसमें साधनों की पूर्ति साधनों की मांग से कम होती है।

चुनाव (चयन) दुर्लभता का प्रतिफल है। चुनाव की आवश्यकता उस समय होती है जब असीमित आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए दुर्लभ साधनों का प्रयोग किया जाता है।

चुनाव (Choice) चुनाव से अभिप्राय उपलब्ध सीमित विकल्पों में से चुनने की प्रक्रिया है। चुनाव की समस्या इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि:

(i) सधन दुर्लभ है (ii) साधनों का वैकल्पिक प्रयोगों में बंटवारा किया जा सकता है।

साधनों की दो मूल विशेषताएं होती है–

(1) सामान्यतः मानव की आवश्यकताओं की तुलना में साधन दुर्लभ होते है।

(2) वैकल्पिक प्रयोगः साधनों के वैकल्पिक प्रयोग होते है। उदाहरण के लिए, भूमि का प्रयोग गेहूँ या चावल उत्पन्न करने या उस पर भवन निर्माण करने के लिए किया जा सकता है।

(i) 'दुर्लभता' के कारण 'चुनाव' होता है।

(ii) चुनाव से अभिप्राय है निर्णय लेने की प्रक्रिया।

(iii) निर्णय लेने की प्रक्रिया का संबंध है सीमित साधनों के इस प्रकार के प्रयोग किए जाने से, जिससे

उपभोक्ता अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करें, उत्पादक अधिकतम लाभ प्राप्त करे, तथा एक राष्ट्र अधिकतम सामाजिक कल्याण प्राप्त करे।

अर्थशास्त्र का सार (The Essence of Economics)

असीमित मानवीय आवश्यकताओं के संबंध में साधनों की दुर्लभता – चुनाव (चयन) की समस्या अथवा साधनों का विभिन्न उपयोगों में बंटवारा – 'दुर्लभता' तथा 'चुनाव' के कारण उत्पन्न होने वाली आर्थिक समस्या अतएव,

↓

अर्थशास्त्र मानव व्यवहार का विज्ञान है

जिसे

↓

चुनाव की समस्या अथवा दुर्लभ साधनों को वैकल्पिक उपयोगों में वांटने की समस्या का सामना करना होता है।

↓

जिससे निम्न उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकेः

↓

–उपभोक्ता की अधिकतम सन्तुष्टि
–उत्पादकों के अधिकतम लाभ
–समाज का अधिकतम कल्याण

आर्थिक क्रिया (Economic Activity)

उस क्रिया को आर्थिक क्रिया कहते है जिसका संबंध मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए दुर्लभ साधनों के उपयोग से होता है। आर्थिक क्रिया द्वारा आय का सृजन होना या न होना आवश्यक नहीं है। किसी वस्तु का उपभोग करना एक आर्थिक क्रिया है (एक वस्तु अपनी परिभाषा से ही दुर्लभ वस्तु होती है)। भले ही इसके द्वारा आय का सृजन न हो अतः आय को सृजित करने वाली सभी क्रियाएँ आर्थिक क्रियाएं होती है किन्तु सभी आर्थिक क्रियाएं जरूरी नहीं कि आय का सृजन करें। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाओं की जानकारी का होना अति आवश्यक है।

1. **उत्पादन** (Production): उत्पादन वह आर्थिक क्रिया है जिसका संबंध वस्तुओं तथा सेवाओं की उपयोगिता या मूल्य में वृद्धि करने से है।

2. **समाजवाद** (Socialism): इस आर्थिक प्रणाली में उपभोग, उत्पादन, विनिमय आदि क्रियाओं पर पूर्ण रूप से सरकार का नियन्त्रण होता है। लोग निजी सम्पत्ति नहीं रख सकते। कीमतें नियोजन अधिकारी द्वारा निर्धारित की जाती है। उत्पादन मुख्यता सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से किया जाता है।

3. **मिश्रित अर्थव्यवस्था** (Mixed Economy): इस प्रकार की आर्थिक प्रणाली में कुछ आर्थिक कार्य करने के लिए लोग स्वतंत्र होते है तथा कुछ आर्थिक कार्यो पर सरकार का नियन्त्रण होता है। इसमें निजी व सरकारी क्षेत्रों का सह–अस्तित्व पाया जाता है। कोई भी उत्पादन लाभ कमाने तथा सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से किया जाता है।

आर्थिक क्रिया क्या है?

आर्थिक क्रिया से अभिप्राय उस क्रिया से है जिसका संबंध आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए सीमित साधनों के प्रयोग से है।

आर्थिक नीतियॉ (Economic Policies)

आर्थिक प्रणालियो के कार्यकरण के फलस्परूप कई प्रकार की आर्थिक समस्यायें उत्पन्न होती है। जैसे बेरोजगारी, कीमत वृद्धि, निर्धनता, मन्दी आदि। इन समस्याओं के समाधान के लिए बनाई गई नीतियों मौद्रिक नीति, राजस्व नीति, कीमत नीति, आर्थिक योजना तथा अन्तर्राष्ट्रीय तरलता सम्बन्धी नीति आदि

का अर्थशास्त्र में अध्ययन किया जाता हैं। अर्थशास्त्र का मुख्य विषय आर्थिक समस्याओं की जांच पड़ताल करना तथा उनके समाधान के विषय में सुझाव देना है।''

प्रकृति (Nature of Economic)

प्रत्येक शास्त्र की प्रकृति यह बतलाती है कि वह विषय विज्ञान है, अथवा कला या विज्ञान और कला दोनों ही है। अर्थशास्त्र की प्रकृति के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि वह एक **वास्तविक तथा आदर्शात्मक विज्ञान और कला दोनों ही है।**

अर्थशास्त्र विज्ञान है (Economics is a Science)

प्रो0 सैलिगमैन में अनुसार, विज्ञान दो प्रकार का हो सकता है। (1) सामाजिक विज्ञान (Social Science) तथा (2) प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science)। अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान है क्योंकि इसका सम्बन्ध मनुष्यों से है। अर्थशास्त्र के सामाजिक विज्ञान होने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते है:

1. **क्रमागत अध्ययन** (Systematic Study): एक सामाजिक विज्ञान के रूप में, अर्थशास्त्र में मनुष्य के व्यवहार का क्रमागत अध्ययन किया जाता है। इसका केन्द्रबिन्दु है। (i) उपभोक्ताओं को अधिकतम सन्तुष्टि, (ii) उत्पादकों के अधिकतम लाभ, तथा (iii) समाज के अधिकतम सामाजिक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त करना।

2. **वैज्ञानिक नियम** (Scientific Laws): अर्थशास्त्र के नियम जैसेः मांग का नियम, पूर्ति का नियम, आदि वैज्ञानिक नियम है। ये नियम विभिन्न चरों के कारण तथा परिणाम (Cause and Effect) में संबंध स्थापित करते है।

3. **नियमों की सत्यता** (Validity of the Laws): प्रत्येक विज्ञान अपने नियमों की सत्यता की जांच भी करता है। अर्थशास्त्र के मांग व अन्य नियमों की सत्यता की जांच की जा सकती है।

अर्थशास्त्र एक प्राकृतिक विज्ञान नहीं है :

(ii) **अर्थशास्त्र के नियम निश्चित नियम नहीं है।**
(iii) **अर्थशास्त्र के नियम सार्वभौमिक नियम नहीं है।**
(iv) **अर्थशास्त्र के नियमों की सत्यता की जांच प्रयोगशालाओं में सम्बन्ध नहीं है।**

अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान के रूप में:–

Economics

B.A. 2nd Semester – Fundamental of Economics – Minor- NEP 2020

वास्तविक विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें किसी विषय की सही तथा वास्तविक स्थिति का अध्ययन होता है एक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र के कथन वास्तविक कथन होते है। वास्तविक कथन वे कथन है जिनसे ज्ञात होता है कि **'क्या है?** (What is?) तथा विशेष परिस्थितियों में **क्या होगा?** (What ought to be?) इन कथनों की जांच की जा सकती है। वास्तविक अर्थशास्त्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि आवश्यकताएं असीमित है, उन्हें पूरा करने वाले अधिकतर साधन दुर्लभ है। इन साधनों के अनेक उपयोग है। ये सब बातें वास्तविक है। एक वास्तविक विज्ञान तथ्यों के बारे में किसी प्रकार का सुझाव नहीं देता है।

अर्थशास्त्र के जिस भाग में वास्तविक कथनों का अध्ययन किया जाता है उसे वास्तविक अर्थशास्त्र (Positive Economics) **कहा जाता है। परन्तु वास्तविक कथन वास्तविक तथ्य हो भी सकते है। और नहीं भी। परन्तु निश्चित रूप से इन कथनों के सत्य अथवा असत्य होने के बारे में जांच की जा सकती है।**

अर्थशास्त्र – एक आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में (Economic – as a Normative Science) :

अनेक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जैसे मार्शल, पीगू, आदि यह मानते है कि अर्थशास्त्र एक आदर्शात्मक विज्ञान भी है। आदर्शात्मक विज्ञान वह विज्ञान है जिसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि क्या होना चाहिए? (What ought to be?) इसका उद्देश्य आदर्शो या लक्ष्यों को निर्धारित करना है।एक आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र के कथन भी आदर्शात्मक होते है। ये कथन मूल्यांकन (Value Judgement) करते है। ये किसी नीति के संबंध में सलाह देते है कि यह ठीक है या गलत है।

अर्थशास्त्र के जिस भाग में आदर्शात्मक कथनों का अध्ययन किया जाता है उसे आदर्शात्मक अर्थशास्त्र (Nomative Economics) **कहा जाता है। आदर्शात्मक कथनों की तथ्यों के आधार पर जांच नहीं की जा सकती। संक्षेप में अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान भी है और आदर्शात्मक भी है।**

अर्थशास्त्र कला के रूप में (Economic as an Art) : किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिये ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग कला कहलाता है।

यह ज्ञात है कि भारत में बेरोजगारी पाई जाती है। यह सूचना अर्थशास्त्र के वास्तविक विज्ञान होने से प्राप्त होती है।

सरकार का लक्ष्य है कि बेरोजगारी दूर होनी चाहिए तथा पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त होनी चाहिये। यह सूचना आदर्शात्मक विज्ञान से प्राप्त होती है।

पूर्ण रोजगार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सरकार आर्थिक नियोजन का मार्ग अपनाती है। नियोजन का मार्ग एक कला है क्योंकि निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग है।

DR. DINESH K GUPTA : Astt. Prof. Dept of Economics,
Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat)
Subscribe: YouTube: https://www.youtube.com/@Dineshgupta94

इसलिये यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र एक कला भी है। **जे. एम. केन्ज** ने कला के स्थान पर व्यावहारिक अर्थशास्त्र (Applied Economics) शब्द का प्रयोग किया है। आधुनिक अर्थशास्त्री **'कला'** के लिये **'आर्थिक नीति'** (Economic Policy) शब्द का प्रयोग करते है।

अन्त में, अर्थशास्त्र विज्ञान तथा कला दोनो ही है। प्रो. चैपमैन ने ठीक ही कहा है कि, ''अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है जो आर्थिक तथ्यों की वास्तविक स्थिति से संबंधित है और एक कला है जो इस प्रकार के उपाय और साधन ढूंढता है जिनसे इच्छित लक्ष्य प्राप्त किये जा सकें।